Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063

Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume - 5 | Issue - 5 | Nov - 2015

रहस्यवादी कवयित्री महादेवी वर्मा एवं उनके संसमरण

शंकर ए.राठोड
हिन्दी अध्यापक, सरकारी स्नातक पूर्व कॉलेज जेवर्गी
,जी॥ कलबुरगी ,कर्नाटक.

प्रस्तावना:

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के कविता के क्षेत्र में जो सवर्णयुग कहते है छायावाद को,उस छायावाद के प्रमुख चार स्तंभ थे–सुमित्रानंदन पंथ, जयशंकर प्रसाद ,सुर्यकांत त्रीपाठी निराला और एकलोति महिला थी महादेवी वर्मा। महादेवी वर्मा का जन्म २६ मार्च १९०७ को उत्तर प्रदेश के फरुखाबाद में हुआ। पिता श्री गोविन्द प्रसाद वर्मा और माता का नाम हेमरानी देवी धर्म परायण ,उच्च कुल की सुसंकृत महिला थी माँ हमेशा पूजा–पाठ,रामायण, महाभारत की पाठ करती थी,दान–धर्म करना उनको अपने परिवार से वीरासत में आयी थी,अत: माँ के उच्च गुण बेटी को आना स्वाभाविक था। पिता गोविन्द वर्मा भागलपुर के एक कालेज में प्राध्यापक थे। पिता ज्ञानी व्यक्ती थे,घर में कभी भी सुशासन पर ज्यादा जोर था। पिता गोविन्द प्रसाद वर्मा शोकिन व्यक्ती थे,संगीत, खेल–कूद और शीकार किया करते थे। माँ शाखाहारी महीला थी लेकिन पिता मांसहारी थे। ऐसे परिवार और दंपत्ति से जन्मी बेटी महादेवी वर्मा में अच्चे गुण और उच्च संस्कार थे। महादेवी वर्मा छायावाद युग के प्रमुख लेखिका है जो उन्होने एक सरल गीतों की गायिका के रुप रहने के कारण कई आलोचक आधुमिक मीरा की संज्ञा देते है। महादेवी की कविताएँ छायावाद की प्रतिनिधि कविता कहलाती है जो संगीत कला,चित्रकला, काव्यकला के साथ परिपूर्ण समन्वय बनाई रखती हैं। जो काव्य के क्षेत्र में रहस्यवाद और छायावाद की विशेषाताएँ इनकी कविताओं में मिलती है। छायावाद के अन्य कवियों की कविताओं में आपको कुछ परिवर्तन जरूर नजर आता है लेकिन वर्मा ने काव्य के क्षेत्र में पहले से लेकर अंत तक जो प्रवृत्ति रहस्यवाद और छायावाद की थी उस राह से कभी भटकती नही। वर्मा का साहित्य संपूण ऑसू ,पीडा, माधुर्य आदि भाव हम देखते है।उनके काव्य में सबसे ज्यादा पीड़ा की प्राधानता रही है। बहूत से आलोचक महादेवी को पीड़ा की कवयित्री कहते हैं। एक जगह पर स्वयम महादेवी कहती है–" दु:ख मेरे जीवन का निकट ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र में बांध रखने की क्षमता रखता है। हमारे असंख्य सुख हमे चाहे मनुष्यता की पहली सीढी तक भी न पंहुचा सकें,किन्तु हमारा एक बुंद भी जीवन को अधिक उर्वर बनाया बिना नही गिर सकता!..... विश्व जीवन में अपने जीवन को विश्व वेदना में अपनी वेदना को इस प्रकार मिला देना जिस प्रकार एक एक जल बिन्दु समुद्र में मिल जाता हैं। मुझे दु:ख के दोनोरूप प्रिय है , एक जो वह मनुष्य के संवेदनशील हृदय को सारे संसार में एक अविच्छीन बंदन में बांद देता हैं,और दूसरा वह जो काल और सीमा के बंधन में पडे असीम चेतना का क्रंदन हैं।'' आगे कहती है–" पीड़ा मेरे मानस से भीगे पट सी लिपटी हैं।''[१]

इस प्रकार महादेवी वर्मा को सबसे ज्यादा प्रिय चीज ही पीडा है। पीडा को वे कभी न मिठनेवाली और उस चीज को अर्थात दु:ख को अपने पास हमेशा रखने का अधिकार वे भगवान से मांगती है। छायावादी दृष्टी से महादेवी काव्य एक प्रकार से नारी पीड़ा को प्रमुख योगदान है। अप्रतिहत आराधना की वेदी पर प्रत्येक सांस न्यौछावर कर देनेवाली महादीवी वर्मा अपना सारा जीवन को मंदिर की ज्योति के तरह समस्त जीव राशी के लिए समर्पित कर दी है। वर्माजी स्त्री होने के नाते स्वाभाविक रुप से उनके व्यक्तित्व में करुणा, स्नेह और मैत्री का भाव कूट–कूट कर भरा हुआ है। हमेशा महादेवी दीपक

समान प्रतिक्षण वे प्रतिपल प्रियतम के पथ को आलोकित अर्थात प्रकाश करने के लिए सजग रहती है। महादेवी स्वयं को जलाकर समस्त जीवन को 'दीपशीखा' की तरह भितर और बहार से प्रकाश देती है। उअकी कविता दीपशिखा में लिखती है कि–पूजारी,दीप कंहा सोता है! जो दृग दानों के आभारी,उर वरदानों के व्यापारी, जिन अधरों पर काँप रही है, अनमांगी भिक्षाएँ सारी, वे कहते, हर सांस सौंप देने को यह रोता है।[२] इस प्रकार महादेवी वर्मा अपने आपको मन्दिर में हमेशा प्रज्वलित होनेवाले दीप से तुलना करती है।

महादीवी वर्मा का साहित्य संसार रहस्यवादि दृष्टि रखता है,उनके प्रत्येक काव्य रहस्यवाद के अनुपम निधि के समान है। स्वयम लेखिका उनकी रहस्यवादि अभिव्यक्ति के बारे में कहा है कि–" उसने परा विद्या की अपर्थिवता ली, वेदांत के अद्वैत की छायामात्र ग्रहण की,लौकिक प्रेम से तिव्रता उधार ली और इन सबको कबिरके सांकेतिक दाम्पत्यभाव सूत्र बांधकर एक निराले स्नेह संबंध की दृष्टि कर डाली,जो मनुश्ष्य के हृदय को आलम्बन दे सका,पार्थिव प्रेम के उपर उठा सका तथा मस्तिष्क को हृदयमय और हृदय को मस्तिष्कमय बना सका।"[३] इस प्रकार से महादेवी के अनुसार सत्य को खोजना कवि का धर्म होता है और जो सच्चा हृदयालु कवि होता है उसके काव्य में सत्य से ओत–प्रोत होता है जैसे सत्य ही काव्य का साध्य और सौंदर्य साधन है।

महदेवी वर्माजी ने गांधीजी के व्यक्तित्व से प्रभावित थे,उन्होने गांधिजी के असहयोग आन्दोलन में भाग लिया और गांधीजी के इस समर्पण के लिए जोशिली कविता लिखती है। गांधीजी ने महादीवी वर्मा के व्यक्तित्व को पहचानकर उन्हे एक सर्वोच्छ स्त्री लेखिका के रुप में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन में मंगला पुरस्कार से सम्मानित करते है। महादेवी वर्मा की दुसरी रचना स्मृति की रेखाएँ, इस रेखा चित्र के अंतर्गत निम्नलिखैत शिर्षक है– भक्तिनी, चीनी फेरिवाला, पर्वत पुत्र, मन्नू की माई, ठकुरी बाबा, बिबिया, गुंगिया आदि कहानी को समेटा है। वर्मा मुलत: एक कवयित्र है लेकिन जो उन्होने गद्य विधा की रचना इतने सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है जैसी उनके यात्रा संस्मरण और रेखाचित्र को पढने पर पता चलता है। वर्मा के रेखाचित्र का स्थान बहुत उंचे है जो वंहा तक पंहुचना आज किसी लेखक को नही हुआ है। स्मृति रेखाओं में निरंतर जिज्ञासाशील वर्मा अपनी स्मृति के अधार पर अमिट रेखाओं द्वाराअत्यंत सहृदयपूर्वक जीवन के विविध रुपों को चित्रित कर उस कथा के द्वारा अलग–अलग पात्रों अमर बनाने में लेखिका सफल हुई है। महादेवी ने उनके हर रेखा–चित्र में गरिब और मध्यम या निम्नवर्ग के पात्रों को समेटा है,यह स्वाभाविक लगता है कि वर्मा एक भावुक सहृदय की कवयित्री थी। विशेषकर उन्होने अपनी रचना में सामाजिक समस्या,और जिसका कोई नही होता जैसे दुर्बल पात्रों को उन्होनें उनके रचना में जगह दी है। इस रेखा–चित्र में वर्मा ने वृद्ध भक्तिन, स्वामी भक्ति, चिनी युवक की मार्मिक जीवन गाथा, पर्वत में हमेशा कुलि बनकर जीवन यापन करनेवाले जंगबहादुर की कथा, बिबिया और गुंगिया जैसे दुर्बल चरित्र,और ठकुरी बाबा जैसी कथा को वर्मा ने सजीव रुप से इस रेखा–चित्र में चित्रित किया है।

इस रेखाचित्र में लेखिका भक्तिन की कहानी सुनाती है–" भक्तिन के जीवन का इतिवृत बिना जाने हुए उनके स्वभाव को पूर्णत: या अंशत: समझना कठिन होगा। वह ऐतिहासिक झूंसी में गांव प्रसिद्ध एक अहिर सुरमा की एकलोती बेटी ही नही,विमाता की क्विदंती बनजानेवाली ममता की काया में भी पली है। पाँच वर्ष की वय में उसे हंडिया ग्राम के एक संपन्न गोपालन की सबसे छोटी पुत्रवधू बनकर पिता ने शास्त्र से दो पग आगे रहने की ख्याति कमाई और नौ वर्षिय युवती का गौना देकर विमाता ने,बिना मांगे पराय धन लौटानेवाले महाजन का पूण्य लूटा।"[४] इस प्रकार भक्तिनी के जीवन में ससूर के परिवार में भोगे दु:ख और पीडा को व्यक्त किया है।

पथ के साथी :–पथ के साथी महादेवी वर्मा द्वारा लिखा गया प्रमुख संस्मरण ग्रंथ है। इस रचना में लेखिका ने अपने समकालिन रचनाकारों का चित्रण किया है। महादेवी वर्मा ने इस रचना के अंतर्गत– कविन्द्र, दद्दा, सुभद्रा, निराला भाई, सुँघनी साहु,सुमित्रानंदन पंथजी, कवि बापू आदि साहित्यकारों को समेटा है। वर्मा ने अपने जीवन के अत्यंत नजदिकी रचनाकारों के जीवन दर्शन को बडी आत्मियता के साथ प्रस्तुत किया है। हिन्दी साहित्य के संस्मरण विधाओं में यह पथ के साथी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ऐसा लगता है कि यह रचना संस्मरण के साथ इस रचना में चित्रित साहित्यकारों की जीवनी जैसा जान पडता है। इस रचना में जो लेखक या साहित्यकारों के जीवन को समग्र रुप से समझने का पुरा पुरा प्रयास रहा है। पथ के साथी संस्मरण में हिन्दी और अन्य साहित्यकार जैसे बंगाली और हमारे राष्ट्रकवि रविन्द्रनाथ ,हिन्दी के मैथली शरणगुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रीपाठी निराला, सुमित्रनंदन पंथ, सुभद्राकुमारी चौहान, सियाराम शरण गुप्त आदि प्रमुख साहित्यकारों का जीवन–दर्शन का चित्रण हुआ है।

इस रचना की भूमिका में लेखिका स्वयं लिखती है–" साहित्यकार की साहित्यिक –सृष्टि का मूल्यंकन तो अनेक आगत–अनगनत युगों में हो सकता है,पर उनके जीवन की कसौटी उसका अपना युग ही रहेगा। यह पर कसौटी जितनी

अकेली है उतनी निर्भांत नही। देश–काल की सीमा में आबद्ध जीवन इतना असंग होता हैकि अपने परिवेश और परिवेशियों स उसका कोई संघर्ष न हो और न यह संघर्ष इतना तरला होता है कि उसके अघातों के चिन्ह शेष न रहे|''[५] राष्ट्रकवि रविन्द्र के बारें में वर्माजी इस संस्मरण में लिखती है–" अमृत को अमृत और विष को विष के रुप में ग्रहण करके भी सभी दे सकते है,परंतु विष में रासायनिक परिवर्तन और तत्वगत अमृत को प्रतक्ष करके देना किसी विग्ध वैद्य का ही कार्य रहेगा। रविन्द्र में ऐसी क्षमता थी और उनकी इस सृजन शक्ति की प्रखर विद्युत को आस्था की सजलता संभाले रहती थी। यह बादल भरी बिजली जब धर्म की सीमा छू गई तब हमारी दृष्टी के सामने फैले ऋढियों के रन्द्रहीन कुहरें में विराट मानव–धर्म की रेखा उद्भासित हो उठी। जब वह साहित्य में स्पंदित हुई जब जीवन की मूल्यों की स्थापना के लिए,तत्व,सत्यमय, सत्य, शिवमय और शिव सौंदर्यमय होकर मुखर हो उठे।''[६] लेखिका ने प्रस्तुत पंक्तियों के द्वारा रविन्द्र के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला है।

महादेवी वर्मा रेखाचित्रों के माध्यम से विधवा जीवन को प्रस्तुत किया है–उस समाधी जैसे घर में लोहे के प्राचीर से घीरे फूल के समान वह किशोरी बालिका बिना किसी संगी साथी,बिना किसी प्रकार के अमोद प्रमोद के मानो निरंतर वृद्धा होने की साधना में लिन थी। भारतीय समाज में विधवा का जीवन मृत्यु से भी बहतर है जो जिन्दगी सारी सुख:सुविधा को त्यागकर बस कष्ट झेलना ही उसके जीवन में बचा होता है। छोटी–छोटी बालिका जो विधवा होजाती है,न उसकी कोई गलती है न समझ है। अतीत के चलचित्र में वर्मा विधवा की स्थिति को दर्शाती है–" सुसरालवालों के अत्याचारों से उसकी हड्डी–हड्डी ढीली होगई है। कुछ देर बैठने से रीढ का दर्द व्याकुल कर देता है और खडे रहने से घूटनो में चिलक उठती है।''[७]

महादेवी वर्मा ने स्मृति की रेखाएँ और अतीत के चलचित्र में ऐसी अनेक असहाय स्त्रियों की कहानी बताती है जो जमाने से इस सामाजिक व्यवस्था ने उन्हे अन्दर और बहार से खोखला बना दी है। भक्तिनी में वर्मा स्त्री की उस घर परिवार की उपेक्षा भाव पर लिखती है–" जब उसने गेंहुएँ रंग और बटिया जैसे मुखवाली पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले तब सास और जिठानियां ने ओठ बिचकाकर उपेक्षा प्रकट की । उचित भी था क्योंकि सास तीन–तीन कमाऊं वीरों की विधात्री बनकर मचिया के उपर विराजमान पुरखिन के पद पर अभिषिक्त हो चूकी थी और जिठानिया काक– भुषुण्डी जैसे काले लालों की क्रमबद्ध पुष्टी करके इस पद के लिए उम्मिदवार थी। छोटी बहू के लिक छोडकर चलने के कारण उसे दण्ड मिलना आवश्यक था। [८] महादेवी वर्मा का प्रस्तुत कथ्य से यह मालूम होता है कि स्त्री ही स्त्री के लिए दुश्मन बनजाती है और पारिवारिक हिंसा की जब बात आती है तो उस घर की सास,जिठानी या ननद आदि स्त्रियाँ बहू के शोषण करते है। इस रचना में नारी के सभी रुप उभरें है। विद्रोहणी स्त्री,राजनीति के क्षेत्र की स्त्रियाँ, विवश ,प्रताडित स्त्री,श्रद्धा ,लज्जा,समर्पण भाव की नारी, पति के अत्याचारों को सहन करनेवाली नारियाँ आदि जो है समाज को दीशा प्रधान करती है–"पुरूष लूटना चाहता है,और नारी लूट जाना|

महादेवी वर्मा के रेखाचित्र का शिर्षिक ' चीनी फेरिवाला' में स्त्री ही स्त्री के लिए बाधक बनने का एक उदाहरण दिया गया है। विमाता अपनी बेटी को ही पैसे कमाने के लालच में उसे वेश्या बनाती है। जब वह वेश्या माँ बनजाती है तो समाज उस स्त्री को देखने की जो धारणा होती है अलग होजाती है,उसकी जिन्दगी नरक बनजाती है। इस समस्या पर महादेवी वर्मा कहती है–"वह पतित कही जानेवाली माँ की पुत्री है और बिना समाज के प्रवेश पत्र के ही साधवी स्त्रियों के मन्दिर में प्रवेश करना चाहती है। उसे पता नही कि समाज के पास वह जादू की छडीहै, जिसे छूकर वह जिस स्त्री को सती कर देता है;केवल वही सती होने का सौभाग्य प्राप्त कर सकती है। समाज इन्हे न जाने कितने दिर्घ काल से,कितने उपायों के द्वारा समझाता आरहा है कि यह माता,पुत्री, आदि त्रीगुणात्मक उपाधियों से रहित जीवन मुक्त नारी मात्र है और इनकी इसी मुक्ति से समाज का कल्याण बांधा है,फिर भी समाज यदि यह अपने गुरू कर्तव्य से च्युत होकर पतित्व ,मातृत्व आदि सम्बंधों को चुराती फिरे तो समाज चुराई हुई वस्तु पर इनका स्वत्व स्वीकार करके के क्या अपना विधान ही मिथ्या कर दे।''[९] प्रस्तुत पंक्तियों में महादेवी ने यह बतलाया है कि जो भी धर्म है,और कठीन नियम है स्त्री पर ही थोपें है, समाज की प्राचीन परम्पराएँ और धर्मग्रंथ स्त्री पर कठोर नियम लगाकर उन्हे बांध रखने का प्रयास हर समय में हुआ है।(अतीत के चलचित्र) महादेवी वर्मा ने स्त्रियों के माध्यम से ऐसे कठिन नियमों का विरोध करवाती है,भक्तिनी में दुसरे विवाह के विरोध में–"हम कूकरी बिलारी न होय,हमारा मन पुसाइ तो हम दुसरे के जाब नाई त तुम्हारा पचै के छाती पर होरहा भूंजब और राज करब,मुझमै रहो।'' इस चलचित्र की कहानी है कि लछमा और वेश्यापुत्री अभागी बहू सुसराल के असह्या अत्याचारों से निराश नही होती ,वरना कथोर परिश्रम करके अपने और अपने परिवार का पालन–पोषण करती है। महादेवी वर्मा ने स्मृति की रेखाओं में नारी चेतना को प्रस्तुत किया है जैसे–समाज में व्याप्त अमस्यएँ, बाल विवाह,विधवा,वेश्या,आदि समस्याओं को

यथार्थ रुप से दिखाते हुए उस समस्या के समाधान के लिए स्त्री को प्रेरणा इनके रचनाओं में मिलता है। माता,विमाता,अनमेल विवाह,सति प्रथा आदि का चित्रण महादेवी वर्मा के अपनी रचना में किया है। महादेवी ने भारतीय संस्कृति से संपन्न नारी का चित्रण भी किया है,जैसे भक्तिनी विधवा रहकर दुसरा विवाह नही करती है।

महादेवी वर्मा ने उनके वृतांत है 'अतीत के चलचित्र',स्मृति की रेखाएँ', मेरा परिवार आदि में ऐसी अनेक कथाएँ हमारे सामने प्रस्तुत की है को समाज में उपेक्षा कही जानेवाली स्त्रियोँ की व्यथा है। इन स्त्री पात्रों के माध्यम से समाज में आज स्त्रियों को चेतना प्रधान करती है। महादेवी वर्मा कई रचनाएँ स्त्री मुक्ती आन्दोलन में सहायक सिद्ध होती है,यूँ कहे कि महादेवी वर्मा ही नारी मुक्ती के बीज बोए है।

मेरा परिवार :–यह महादेवी वर्मा द्वारा लिखा गया एक प्रमुख संस्मरण ग्रंथ है,इसमें महादेवी जी ने उत्कृष्ट कहानियों को समेटा है। मेरा परिवार में जितनी कहानियाँ है,वे सभी वन्यजीवी पर आधारित है, जैसे कि–नीलकंठ, गिल्लु, सोना, दुर्मुख, गौरा, नीलु, निक्की–रोजी और रानी आदि । वर्माजी का परिवार बहुत बडा है उन्होने अपने घर में गाय,कुत्ता,बिल्ली से लेकर हर प्रकार की प्राणी–पक्षियों को पाल रखा है,वर्मा की अपनी एक अलग दुनिया है और उस प्राणी–पक्षी की दुनिया में वे बहुत खुश है। उस परिवार के साथ महादेवी अपना जिन्दगी को खुशी के साथ बिताती है। मेरा परिवार की सभी कहानियाँ उन मूकजिवी के प्रति सहानुभूति प्रकट करती है।

महादेवी वर्मा ने बहुत सोच समझकर इस कृति को मेरा परिवार नाम दिया है और सच्च ही वर्माजी का पला–फुला उस प्राणी–पक्षियों का परिवार है। जिस प्रकार पंचतंत्र की कथा का उपदेश–"उदारचरित्रानांतु वसुदैव कुटुंबकम्'' के प्रकर वर्मा में केवल जीव मात्र के प्रति–प्रेम की संवेदना ही नही बल्कि उनके प्रति लेखिका के मन में उन परिवार के प्रति अप्रतिम स्नेह और प्यार था,अत्यंत मानवीय एवं जन्म–जन्मांतर की संवेदना है। इस रचना में महादेवी कुछ मानवेतर प्राणी–पक्षियों में मानव को देखा है,मानवीय भावनाओं को प्राणी में खोजा है। गौरा नामक एक गाय की कथा इस संस्मरण में आता है जो लेखिका कहती है कि जब गौरा का दूध निकालने ग्वाला वंहा जाता तो उस गौरा के चारों नन्ने–मुन्ने बच्चे,कुत्ते,बिल्लियाँ, अपने हाथों में कटोरा लेकर बैठ जाथे थे,जब उस गौरा का दूध [इकर खुशी के साथ वे नाचते गाते हुए गौरा का शुक्रीय अदा करते थे। तो इस प्रकार था वर्मा का परिवार। मनुष्य और प्राणी में कुच अंतर नही दिखता था वर्माजी को। इस गौरा की कहानी में जब कोई ग्वाला गाय को सुइ गुड में खिला देता है तो गाय का उपचार और उसकी चिकित्सा मनुष्य से ज्यादा करती है,उसे डाक्टर के पास लेजाती,सेब का जुस पिलाती,पानी पिलाना,दवा–दारु करना कोई मनुष्य के लिए भी यह सब नही कर सकते है। जब उस गाय का बच्चा बहुत सुंदर रहता है,गाय की स्थिति चिंताजनक होजाती तब लेखिका रात भर जागकर उसे देखती और उस गाय के बछडा को बहार का दूध पिलाती है। एक दिन रात उस गाय रंभा कर लेखिका को पुकारती जब लेखिका रात को बहार उस गाय के पास जाती,गाय लेखिका के कंधे पर अपना गर्दन रखकर प्राण त्याग देती है। लेखिका ने इस प्रकार से प्राणी और मानव के बिच के संबंध को मानविय दृष्टी से देखने की कोशीस की है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

१. महादेवी वर्मा के काव्य एक अध्ययन–डॉ विमल
२. दीपशिखा–महादेवी वर्मा
३. दीपशिखा–महादेवी वर्मा
४. दीपशिखा महादेवी वर्मा
५. स्मृति की रेखाएँ महादेवी वर्मा
६. स्मृति की रेखाएँ –महादेवी वर्मा
७. अतीत के चलचित्र–महादेवी वर्मा
८. अतीत के चलचित्र–महादेवी वर्मा
९. मेरा परिवार–महादेवी वमा